श्वरी देवी राजकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय
भरतपुर (राजस्थान)

हिन्दी विभाग

(एक रिपोर्ट)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 12 वीं योजनानुसार क्रियान्वित नवाचार कार्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित अन्तर–विषयी एवं विषयनिष्ठ व्याख्यान कार्यक्रम।

विभागाध्यक्ष

डॉ. सीताराम लहरी

संयोजिका

डॉ. शशिप्रभा

वरिष्ठ व्याख्याता (हिन्दी विभाग)

रामेश्वरी देवी राजकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, भरतपुर

हिन्दी विभाग

रिपोर्ट

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 12वीं योजनानुसार महाविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा नवाचार कार्यक्रम के रूप में दिनांक 18.01.2017 को आयोजित अन्तरविषयी एवं विषयनिष्ठ विस्तार–व्याख्यानों की सविस्तर रिपोर्ट–

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 12वीं योजनानुसार हिन्दी विभाग ने नवाचार कार्यक्रम के तहत दो व्याख्यान कार्यक्रमों का दिनांक 18.01.2017 को आयोजन किया।

प्रथम– अन्तर– विषयी विस्तार व्याख्यान

विषय – भारतीय दर्शन

व्याख्याता – डॉ. राजवीर सिंह शेखावत

वरिष्ठ व्याख्याता, दर्शनशास्त्र महारानी श्री जया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर।

उद्देश्य :– जीवन को सुखद एवं संरक्षित करने में रत विश्व की सभी ज्ञान धाराएँ साहित्य के समुद्र में लय होती हैं। इसी से 'कु' धातु में अच् (इ) प्रत्यान्त कवि शब्द का अर्थ सर्वज्ञाता और कर्म काव्य है। स्पष्ट है कि अपनी अनुभूति में सब कुछ समेट लेने वाला ही कवि होता है और कवि–कर्म अर्थात काव्य में ज्ञान की समग्र संभावनाएँ अभिव्यक्त होती हैं। साथ ही 'शब्दार्थौ सहितौ' अर्थात शब्द और अर्थ का हितकारी सहकार होने से ही काव्य साहित्य है। स्पष्ट है कि जीवन के लिए हितकारी, सृष्टि का हर ज्ञान, विज्ञान, दर्शन, इतिहास, संस्कृति साहित्य की परिधि में समाविष्ट है। इसी से साहित्य का सर्जन हो या अनुशीलन–अध्ययन, साहित्येतर अन्यान्य विषयों का यथेष्ट ज्ञान होना भी आवश्यक है। आज के भूमंडलीकरण एवं वैज्ञानिक चेतना के युग में ज्ञान की सभी शाखाएँ और भी अधिक घनिष्ठ होती दिखाई देती है। इसी से साहित्य के विद्यार्थियों के लिए नवाचार के रूप में 'भारतीय दर्शन' पर व्याख्यान हेतु दर्शनशास्त्र के विशेषज्ञ डॉ. राजवीर

सिंह शेखावत, महारानी श्री जया स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर को आमंत्रित किया गया। साहित्य और दर्शन दोनों का ही लक्ष्य मानव के हित का साधन ही है।

व्याख्यान सार– दिनांक 18.01.2017 को प्रथम सत्र में विद्वान दर्शनशास्त्री डॉ. राजवीर सिंह शेखावत ने भारतीय दर्शन के इतिहास, परम्परा, अंगों, उपांगों एवं स्वरूप को विस्तार से व्याख्यायित किया। इस क्रम में उन्होंने दर्शन के आरंभ एवं औचित्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि पशु से बुद्वि के वैशिष्ट्य के कारण मनुष्य केवल जीवन व्यतीत नहीं करता, वह जीवन के उद्गम एवं लक्ष्य को भी बुद्वि द्वारा शोधने का प्रयास करता है। वह तर्कसंगत युक्तियों द्वारा तत्वज्ञान प्राप्ति का उद्यम करता है। यही प्रयास या उद्यम दर्शन है। साहित्य और दर्शन दोनों ही सभ्यता के आरम्भ से संसार, जीवन, मनुष्य, सृष्टि के स्रष्टा आदि के रहस्यों को शोधते आ रहे हैं। इसी से दोनों का संबंध परस्पर अन्योन्याश्रित सा घनिष्ठ है। भारतीय दर्शन की परम्परा आरंभ से ही अत्यंत समृद्व रही है।

छात्राओं की भ्रांति का निवारण करते हुए डॉ. शेखावत ने बताया कि भारतीय दर्शन केवल हिन्दू दर्शन या वेदावलंबी मात्र नहीं है। वेदानुवर्ती हिन्दू, जैन, बौद्व चार्वाक आदि वे सभी दर्शन जो भारत भूमि पर विकसे हैं भारतीय दर्शन हैं। उन्होंने आस्तिक (वेदानुवर्ती) षडदर्शन–मीमांसा, वेदांत, सांख्य, योग, न्याय एवं वैशैषिक तथा नास्तिक (वेदों को न मानने वाले) चार्वाक, बौद्ध एवं जैन दर्शनों –शैव, पाणिनीय एवं रसेश्वर (आयुर्वेद) पर भी रोचकता से प्रकाश डाला।

छात्राओं की जिज्ञासा शांत करते हुए डॉ. शेखावत ने बताया कि सभी आस्तिक दर्शन ईश्वरवादी नहीं हैं–यथा मीमांसा एवं सांख्य। किन्तु चार्वाण दर्शन के अतिरिक्त परलोक की कल्पना आस्तिक नास्तिक सभी भारतीय दर्शन करते हैं।

अंत में संयोजिका डॉ. शशिप्रभा वरिष्ठ व्याख्याता हिन्दी ने संक्षेप में हिन्दी साहित्य के भक्ति काल से लेकर आधुनिक छायावाद तक साहित्य में प्रवाहित भारतीय दर्शन की अजस्र धारा पर प्रकाश डालते हुए सत्र समाप्त किया।

द्वितीय सत्रः– विषयनिष्ठ विस्तार व्याख्यान

विषयः– कहानी लेखन की रचना प्रक्रिया

व्याख्याताः– डॉ0 अशोक कुमार सक्सेना •

लब्धप्रठिष्ठ हिन्दी कहानीकार, भरतपुर

(3 कहानी संग्रह प्रकाशित। 50 से अधिक कहानियाँ, सारिका, धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स आदि शिखर स्तर की पत्रिकाओं व पत्रों में प्रकाशित)

उद्देश्यः– आधुनिक हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा कहानी के पठन ही नहीं लेखन में भी छात्र–प्रतिभा रूचि लेती है। कहानी की कथावस्तु भले ही काल्पनिक हो किन्तु अनुभूति और संवेदना जिए जा चुके जीवन के सत्य को ही प्रतिबिम्बित करती है। कहानी–कला एवं साहित्य–सर्जन की रचना एवं अनुशीलन दोनों ही दृष्टि से एक कहानी कलाकार का व्याख्यान साहित्य की छात्राओं के लिए असंदिग्ध रूप से उपयोगी होता है।

व्याख्यान–सारः–

कहानीकार डॉ. अशोक सक्सैना ने बहुत ही सरस एवं व्यावहारिक दृष्टि से कहानी लेखन की रचना प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रभावी एवं प्रेरणादायी रीति से बताया कि एक संवेदनशील हृदय अपने जीवन या अपने आस–पास के किसी भी प्रकरण को कहानी की सामग्री के रूप में प्रयोग कर सकता है। शर्त यह है कि रचनाकार की अनुभूति सच्ची हो, मानव सापेक्ष हो पर अभिव्यक्ति व्यक्ति –निरपेक्ष। यद्यपि कला पूर्णतः व्यक्ति निरपेक्ष नहीं पाता। दृष्टि एवं अभिव्यक्ति शैली में लेखक का अपना व्यक्तिरूप झलक ही आता है, तथापि मानवता से मूल संवेदना का जुडाव लेखक के व्यक्ति चिह्नों को समष्टि में ऐसे घुला देता है जैसे जल में मिश्री व केसर। विद्वान वक्ता ने प्रेमचंद की 'नमक का दरोगा' एवं स्वयं की 'अब्बू' आदि कुछ कहानियों का उदाहरण देकर कहानी रचने की प्रक्रिया पर विस्तार से सार्थक एवं प्रभावी चिंतन प्रस्तुत किया।

संयोजिका

(डॉ. शशिप्रभा)
वरिष्ठ व्याख्याता (हिन्दी विभाग)

राजेश्वरी देवी राज कीय कन्या महाविद्यालय, भरतपुर

दिनांक 18.1.2017 को UGC की 12वीं योजनानुसार नवाचार के रूप में हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित अंतर-विषयी व्याख्यान कार्यक्रम हेतु व्याख्यान देते डा० राजवीर सिंह शेखावत (दर्शनशास्त्री)

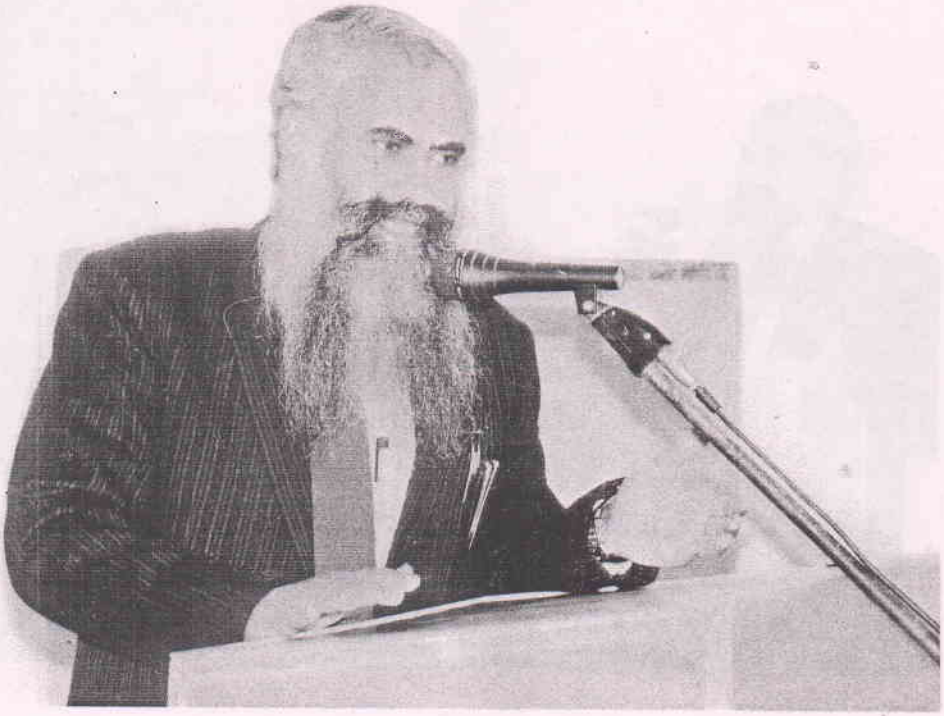

रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय, भरतपुर

18.1.2017 को U.G.C की 12वी कार्ययोजनानुसार
विस्तार व्याख्यान देते अतिथि व्याख्याता
डा० राजवीर सिंह शेखावत

मंचस्थ - बाँयें से डा० श्रीमती राजलक्ष्मी (उपाचार्य),
डा० सीताराम लहरी (हिन्दी विभागाध्यक्ष) एवं
डा० शशिप्रभा (वरिष्ठ हिन्दी व्याख्याता एवं संयोजिका)

दिनांक 18.1.2017 को U.G.C. की 12वीं योजनानुसार नवाचार के रूप में विषयनिष्ठ विस्तार व्याख्यान की श्रोता स्नातक एवं परास्नातक छात्राएँ —

रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय, भरतपुर

दिनांक 18.1.2017 को U.G.C. द्वारा निर्दिष्ट 12वीं योजना के अनुसार विस्तार व्याख्यान देते अतिथि कहानीकार डा० अशोक सक्सेना

मंचस्थ हैं बाँये से श्रीमती राजलक्ष्मी गौतम (उपाचार्य), डा० राजवीर सिंह शेखावत (दर्शनशास्त्री), डा० सीताराम लहरी (हिन्दी विभागाध्यक्ष), डा० आशिमा (वरिष्ठ हिन्दी व्याख्याता एवं संयोजिका)

रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय भरतपुर

दिनांक 18.1.17 को U.G.C. की बारहवीं योजनानुसार हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित विस्तार व्याख्यान में व्याख्यान देने आमंत्रित कहानीकार डा० अशोक सक्सेना

मंचस्थ बाँये से उपाचार्य श्रीमती राजलक्ष्मी गौतम, डा० राजवीर सिंह शेखावत (दर्शन शास्त्री), डा० सीताराम लहरी (विभागाध्यक्ष), डा० शशिप्रभा (संयोजिका एवं वरिष्ठ हिन्दी व्याख्याता)

रामेश्वरी देवी राजकीय कन्या महाविद्यालय
भरतपुर

18.1.2017 को U.G.C. की 12वीं पंचवर्षीय योजनानुसार हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित विस्तार व्याख्यान को सुनते हुए महाविद्यालय की छात्राएँ एवं शिक्षक गण

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 12 वीं योजनानुसार दिनांक 18.01.2017 को आयोजित हिन्दी विभाग के अन्तर–विषयी एवं विषयनिष्ठ व्याख्यान की श्रोता छात्राऐं

कक्षा – बी.ए. पार्ट III		कक्षा – बी.ए. पार्ट II		कक्षा – M.A (P) HINDI		कक्षा – M.A (F) HINDI	
क्र.सं	छात्रा का नाम	क्र.सं	छात्रा का नाम	क्र.सं	छात्रा का नाम	क्र.सं	छात्रा का नाम
1	आकृति किशन	1	गुंजन अग्रवाल	1	रश्मि कुमारी	1	इंजला कुमारी
2	अनीता देवी			2	कविता कुमारी	2	कविता कुमारी मीणा
3	जया कुमारी			3	टीना कुमारी	3	मधु सन्तावन
4	ज्योति कुमारी			4	प्रियंका कुमारी	4	नेहा जैन
5	ज्योति कुमारी			5	आरती कुमारी	5	पूजा कुमारी
6	आशा			6	नीतू चौधरी	6	रूचि
7	आरती नगाइच			7	रश्मि कुमारी (D.C)	7	रेनु कुमारी
8	कुसुम कुमारी			8	प्रवेश शर्मा	8	चंचल सैनी
9	मनीषा			9	अर्चना कुमारी	9	दीप्ति मैथिल
10	मनीषा कुमारी			10	रचना	10	शशि
11	मनीषा शर्मा			11	रीनम कुमारी	11	प्रिया सिंह
12	मनु			12	राखी कुमारी	12	कुसुमा कुमारी
13	मोनिका कुमारी			13	संगीता	13	चित्रा
14	नीरज कुमारी			14	शालू कुमारी मीणा	14	चंचल कुमारी
15	निशा कुमारी			15	लक्ष्मी देवी	15	सपना
16	ममता कुमारी						
17	कौशल्या कुमारी						
18	आरती						
19	वसुधा						
20	सीमा						
21	शशिबाला						
22	सुमन कुमारी						
23	सावित्री						
24	निर्मल						
25	नेहा शर्मा						
26	मुक्ता शर्मा						
27	गुन्नार						
28	सलौनी शर्मा						
29	रेनू कुमारी						

कार्यालय प्राचार्य, रामेश्वरी देवी राज0 स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय,भरतपुर

फोन नं.05644-222774 Email- rdgirls@gmail.com Fax:- 05644.222850

WWW.dce.rajasthan.gov.in

दिनांक:-18.01.201

प्रेस–नोट

आज दिनांक 18.01.2017 को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 12 वीं योजनानुसार महाविद्यालय के हिन्द विभाग द्वारा प्राचार्य डॉ0 अशोक कुमार बंसल की अध्यक्षता में 'विस्तार व्याख्यान' कार्यक्रम आयोजित किया गया प्रथम सत्र में महारानी श्री जया महाविद्यालय से आमंत्रित डॉ0 राजवीर सिंह शेखावत, विभागाध्यक्ष दर्शनशास्त्र 'भारतीय दर्शन' की समृद्व परम्परा और स्वरूप पर विस्तार से प्रकाश डाला। संचालिका डॉ0 शशिप्रभा ने हिन्द साहित्य में भारतीय दर्शन की व्यापक भूमिका का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि साहित्य के समुद्र में मान हित साधक सभी विषयों का समावेश है। हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ0 सीताराम लहरी ने विषयविशेषज्ञ डॉ0 राजवीर सिं के व्यक्तिव व कृतित्व से सभा को परिचित कराया।

द्वितीय सत्र में हिन्दी के वरिष्ठ कहानीकार श्री अशोक सक्सेना ने कहानी लेखन की प्रक्रिया पर अत्यन्त रोचक एवं व्यवहारिक दृष्टि से विस्तार से प्रकाश डाला उन्होने बताया कि कहानियां तो हम सबके चारो ओ बिखरी है आवश्यकता है उन्हें संवेदनशीलता से परख पहचानकर अभिव्यक्ति देने की। रचनाकार का कौश अभिव्यक्ति में है और यह अभिव्यक्ति बहुधा अभ्यास से परिपक्व होती है। उपाचार्या श्रीमती राजलक्ष्मी गौतम दर्शन की जटिलता और कहानी की सहजता के कौतूहल पूर्ण समन्वय की सराहना की प्राचार्य डॉ0 अशोक बंस ने अपन अध्यक्षीय भाषण में यूजीसी की योजना की उपादेयता पर प्रकाश डाला। डॉ0 कविता आचार्य श्रीम अनीता मीना ने व्यवस्था में सहयोग किया इस अवसर पर डॉ0 शशिप्रभा गुप्ता, श्रीमती मधु शर्मा, श्रीमती राध शर्मा, श्रीमती अंजना कौल, डॉ0 सरोज आदि अनेक व्याख्यातागण उपस्थित थ।

18.01.17

प्राचार्य